IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# "पवित्र संसाधन के रूप में जलः प्राचीन भारतीय ग्रंथो और अनुष्ठानों में नदियों और जल निकायों का सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व"

[1]राजन कसौधन
शोधार्थी
प्राचीन इतिहास विभाग
रतन सेन डिग्री कॉलेज, बांसी
सिद्धार्थनगर, उत्तर प्रदेश
(सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु)

सिद्धार्थनगर

**सारः** यह शोध प्राचीन भारतीय ग्रंथों और अनुष्ठानों में जल के गहन सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व की खोज करता है, तथा पवित्र संसाधन के रूप में इसकी भूमिका पर जोर देता है। अध्ययन वेदों, पुराणों और महाकाव्यों में नदियों और जल निकायों के चित्रण पर गहराई से विचार करता है, जहाँ जल को दिव्य माना जाता है और इसके जीवन–निर्वाह और शुद्धिकरण गुणों के लिए पूजनीय माना जाता है। दैनिक स्नान, प्रमुख धार्मिक समारोह और तीर्थयात्रा जैसे अनुष्ठान आध्यात्मिक और सामुदायिक जीवन दोनों में जल की केंद्रीयता को उजागर करते हैं। शोध प्राचीन भारत में जल की पवित्रता की तुलना मिस्र, मेसोपोटामिया और ग्रीस जैसी अन्य सभ्यताओं से भी करता है, जिससे समानताएँ और अनोखे पहलू दोनों ही सामने आते हैं। इसके अलावा, दक्षिण पूर्व एशिया में पड़ोसी संस्कृतियों पर भारतीय जल अवधारणाओं के प्रभाव की जाँच की जाती है, जो हिंदू और बौद्ध जल प्रतीकवाद के प्रसार को दर्शाता है। अध्ययन प्राचीन भारत में प्रकृति, आध्यात्मिकता और मानव जीवन के अंतर्संबंध को रेखांकित करता है, साथ ही जल अनुष्ठानों पर उपनिवेशवाद के प्रभाव और प्राचीन जल प्रथाओं की आधुनिक प्रासंगिकता पर भविष्य के शोध का सुझाव देता है।

**सूचक शब्दः** पवित्र जल, प्राचीन भारत, वेद, अनुष्ठान, तीर्थयात्रा, गंगा, जल संरक्षण, हिंदू धर्म, तुलनात्मक विश्लेषण, दक्षिण पूर्व एशिया आदि।

# 1. परिचय

## पृष्ठभूमि और तर्क

पानी हमेशा से ही मानव जीवन का एक मूलभूत तत्व रहा है, जो न केवल जीवित रहने के लिए एक भौतिक आवश्यकता के रूप में कार्य करता है, बल्कि गहन सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व का स्रोत भी है। विभिन्न सभ्यताओं में, पानी को पवित्रता, उर्वरता और जीवन के प्रतीक के रूप में पूजनीय माना जाता रहा है। प्राचीन भारत के संदर्भ में, पानी का एक विशेष रूप से पवित्र स्थान है, जो समाज के सांस्कृतिक और धार्मिक ताने–बाने में गहराई से समाया हुआ है। नदियों, झीलों और अन्य जल निकायों को न केवल भौतिक संस्थाओं के रूप में देखा जाता था, बल्कि दिव्य अभिव्यक्तियों के रूप में भी देखा जाता था, जिनमें से प्रत्येक की अपनी पौराणिक और आध्यात्मिक पहचान होती थी[1]।

प्राचीन भारतीय विचार में पानी को दी गई पवित्रता धार्मिक ग्रंथों, अनुष्ठानों और प्रथाओं में इसकी व्यापक उपस्थिति से स्पष्ट होती है। गंगा, यमुना और सरस्वती जैसी नदियों को देवी के रूप में प्रतिष्ठित किया जाता है, और माना जाता है कि उनके पानी में शुद्ध करने वाले और जीवन को बनाए रखने वाले गुण होते हैं। पानी के प्रति यह श्रद्धा केवल भौतिक पोषण से आगे बढ़कर आध्यात्मिक आयाम को भी शामिल करती है, जहाँ पानी को भौतिक और दिव्य के बीच एक सेतु के रूप में देखा जाता है।

इस समृद्ध सांस्कृतिक और धार्मिक पृष्ठभूमि को देखते हुए, यह शोध प्राचीन भारत में पवित्र संसाधन के रूप में जल के महत्व का पता लगाने का प्रयास करता है। अध्ययन इस आवश्यकता से प्रेरित है कि प्राचीन भारतीय समाजों के सामाजिक और धार्मिक जीवन में जल को किस तरह से माना जाता था, उसका सम्मान किया जाता था और उसका एकीकरण किया जाता था। प्राचीन ग्रंथों और अनुष्ठानों की जांच करके, इस शोध का उद्देश्य जल से जुड़े गहरे सांस्कृतिक अर्थों और धार्मिक मूल्यों पर प्रकाश डालना है।

## अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्ययन का प्राथमिक उद्देश्य प्राचीन भारतीय ग्रंथों में नदियों और जल निकायों के प्रतिनिधित्व का पता लगाना है। इसमें वेदों, पुराणों और महाकाव्यों में जल को किस तरह से दर्शाया गया है और इसके लिए क्या प्रतीकात्मक अर्थ दिए गए हैं, इसका विस्तृत विश्लेषण शामिल है। इसके अतिरिक्त, अध्ययन का उद्देश्य प्राचीन भारतीय परंपराओं में जल से जुड़े अनुष्ठानों और प्रथाओं का विश्लेषण करना है, यह पता लगाना है कि ये अनुष्ठान जल की पवित्रता और धार्मिक जीवन में इसकी भूमिका को कैसे दर्शाते हैं।

## शोध प्रश्न

इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए, शोध कई प्रमुख प्रश्नों द्वारा निर्देशित है:

- प्राचीन भारतीय ग्रंथों में नदियों और जल निकायों को कैसे दर्शाया गया है?
- अनुष्ठानों और प्रथाओं में जल को क्या धार्मिक महत्व दिया गया है?
- प्राचीन भारत में जल की पवित्रता ने सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन को किस तरह प्रभावित किया?

## कार्यप्रणाली

प्राचीन भारत में जल के सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व का पता लगाने के लिए शोध एक बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाता है। प्राथमिक कार्यप्रणाली में वेद, पुराण और महाकाव्यों सहित प्राचीन भारतीय स्रोतों का शाब्दिक विश्लेषण शामिल है। ये ग्रंथ जल के प्रतीकात्मक और धार्मिक महत्व पर जानकारी का एक समृद्ध भंडार प्रदान करते हैं। विश्लेषण जल और उसके पवित्र गुणों से संबंधित प्रमुख विषयों, प्रतीकों और आख्यानों की पहचान करने पर केंद्रित होगा।

शाब्दिक विश्लेषण के अलावा, अध्ययन अन्य प्राचीन संस्कृतियों के साथ तुलनात्मक विश्लेषण करेगा जहाँ जल का धार्मिक महत्व भी था। इससे भारतीय संदर्भ के अनूठे पहलुओं और संस्कृतियों में जल पूजा के व्यापक पैटर्न को समझने में मदद मिलेगी। इसके अलावा, जल से जुड़े अनुष्ठानों और धार्मिक प्रथाओं की जाँच करने के लिए एक व्याख्यात्मक दृष्टिकोण लागू किया जाएगा, यह विश्लेषण करते हुए कि ये प्रथाएँ जल की पवित्रता से संबंधित अंतर्निहित मान्यताओं और मूल्यों को कैसे दर्शाती हैं।

## 2. जल में पवित्रता की अवधारणा

प्राचीन भारतीय दर्शन में जल का केंद्रीय स्थान है, जहाँ इसे न केवल जीवन के मूल तत्व के रूप में बल्कि गहरे आध्यात्मिक महत्व से युक्त एक पवित्र इकाई के रूप में भी माना जाता है। भारतीय ब्रह्मांड विज्ञान में, पवित्रता की अवधारणा प्राकृतिक दुनिया से जुड़ी हुई है, और पाँच महान तत्वों (पंच महाभूत) में से एक के रूप में जल को एक महत्वपूर्ण शक्ति माना जाता है जो सभी जीवन को बनाए रखती है। भारतीय दर्शन में पवित्रता का विचार जल के भौतिक गुणों से परे इसके प्रतीकात्मक और आध्यात्मिक आयामों को शामिल करता है, जो एक ऐसे विश्वदृष्टि को दर्शाता है जहाँ भौतिक और दिव्य एक दूसरे से अभिन्न रूप से जुड़े हुए हैं[2]।

प्राचीन भारतीय विचार में, जल की पवित्रता जीवन देने वाली शक्ति के रूप में इसकी भूमिका में निहित है, जो शारीरिक अस्तित्व और आध्यात्मिक शुद्धि दोनों के लिए आवश्यक है। भारतीय साहित्य के सबसे पुराने और सबसे पूजनीय ग्रंथ वेद अक्सर जल को जीवन और सृजन के स्रोत के रूप में बोलते हैं। उदाहरण के लिए, ऋग्वेद में ऐसे भजन हैं जो जल की जीवनदायी गुणों के लिए प्रशंसा करते हैं, इसे एक शुद्ध करने वाले एजेंट के रूप में पुकारते हैं जो शरीर और आत्मा दोनों को शुद्ध करता है। जल की यह दोहरी भूमिका – एक भौतिक और आध्यात्मिक शोधक के रूप में – भारतीय ब्रह्मांड विज्ञान में इसकी अनूठी स्थिति को उजागर करती है, जहाँ प्राकृतिक तत्वों को दिव्य की अभिव्यक्ति के रूप में देखा जाता है।

विभिन्न प्राचीन भारतीय ग्रंथों में जल के प्रतीकात्मक महत्व को और विस्तृत किया गया है, जहाँ इसे लगातार जीवन, पवित्रता और उर्वरता के प्रतीक के रूप में चित्रित किया गया है। इन ग्रंथों में, जल केवल एक पदार्थ नहीं है, बल्कि सृजन और उत्थान का एक शक्तिशाली प्रतीक है। जीवनदाता के रूप में जल की धारणा उर्वरता के साथ इसके जुड़ाव से बहुत करीब से जुड़ी हुई है, जैसा कि नदियों और जल निकायों के कई संदर्भों में देखा जा सकता है, जो कृषि और मानव जीवन को बनाए रखने वाली पोषण शक्तियों के रूप में हैं। यह प्रतीकात्मकता विशेष रूप से नदियों को दिव्य माताओं के रूप में चित्रित करने में स्पष्ट है, जो न केवल अपने जल से पृथ्वी का पोषण करती हैं, बल्कि व्यक्तियों और समुदायों की आध्यात्मिक और नैतिक भलाई में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं[3]। प्राचीन भारतीय ग्रंथों में देवताओं के रूप में इसके मानवीकरण में भी जल की पवित्रता स्पष्ट है। गंगा, यमुना और सरस्वती जैसी नदियाँ केवल भौगोलिक इकाईयाँ नहीं हैं, बल्कि अपने अलग–अलग

व्यक्तित्व और गुणों के साथ देवी के रूप में पूजनीय हैं। उदाहरण के लिए, गंगा को एक दिव्य नदी के रूप में पूजा जाता है जो मानवता को उसके पापों से मुक्त करने के लिए स्वर्ग से उतरती है। नदियों का यह दिव्य पहलू उनकी शुद्ध करने वाली शक्तियों में विश्वास को रेखांकित करता है, जो भौतिक क्षेत्र से परे और आध्यात्मिक मोक्ष प्रदान करने वाली मानी जाती हैं। नदियों को दिव्य ऊर्जा के अवतार के रूप में देखने का विचार प्राचीन भारतीय साहित्य में एक आवर्ती विषय है, जहाँ पानी को अक्सर सांसारिक और दिव्य के बीच एक नाली के रूप में दर्शाया जाता है। नदियों का आध्यात्मिक और अनुष्ठानिक महत्व उनके इर्द–गिर्द घूमने वाली कई धार्मिक प्रथाओं और अनुष्ठानों में और भी उजागर होता है। हिंदू धर्म में, नदियों को पवित्र स्थान माना जाता है जहाँ दिव्य उपस्थिति सबसे अधिक स्पष्ट होती है, जो उन्हें धार्मिक अनुष्ठान करने के लिए आदर्श स्थान बनाती है। इस संबंध में गंगा, यमुना और सरस्वती विशेष रूप से प्रमुख हैं, प्रत्येक नदी के अपने अनुष्ठान और त्यौहार हैं जो इसके दिव्य गुणों का जश्न मनाते हैं। उदाहरण के लिए, गंगा आरती का केंद्र बिंदु गंगा है, यह एक दैनिक अनुष्ठान है जिसमें भक्त नदी के तट पर प्रार्थना करते हैं और दीपक जलाते हैं, जो व्यक्तिगत आत्मा के ब्रह्मांडीय आत्मा के साथ विलय का प्रतीक है[4]।

हिंदू धर्म में नदियों और दिव्य स्त्री के बीच संबंध पानी की पवित्रता को और मजबूत करता है। कई प्राचीन भारतीय ग्रंथों में, नदियों को देवी के रूप में चित्रित किया गया है जो स्त्री सिद्धांत के पोषण और जीवन देने वाले पहलुओं को मूर्त रूप देती हैं। यह जुड़ाव नदियों को माताओं के रूप में चित्रित करने में सबसे अधिक स्पष्ट है जो अपने भक्तों की देखभाल और सुरक्षा करती हैं। उदाहरण के लिए, गंगा को अक्सर "गंगा माता" (माँ गंगा) के रूप में संदर्भित किया जाता है, एक मातृ आकृति जो अपने बच्चों को आध्यात्मिक पोषण और मार्गदर्शन प्रदान करती है। यह मातृ छवि केवल गंगा तक ही सीमित नहीं हैय यमुना और सरस्वती जैसी अन्य नदियाँ भी मातृ आकृतियों के रूप में पूजनीय हैं, जिनमें से प्रत्येक की समुदाय के आध्यात्मिक जीवन में अपनी अलग भूमिका है।

इस प्रकार प्राचीन भारतीय दर्शन में जल की पवित्रता एक बहुआयामी अवधारणा है जो अस्तित्व के भौतिक और आध्यात्मिक दोनों आयामों को समाहित करती है। जल को न केवल इसके जीवन–निर्वाह गुणों के लिए बल्कि शुद्धिकरण और पुनर्जीवन शक्ति के रूप में इसके प्रतीकात्मक महत्व के लिए भी सम्मानित किया जाता है। यह श्रद्धा नदियों और जल निकायों के इर्द–गिर्द केंद्रित कई अनुष्ठानों और धार्मिक प्रथाओं में परिलक्षित होती है, जहाँ जल की पवित्रता का जश्न मनाया जाता है और विभिन्न रूपों में इसका आह्वान किया जाता है। इन प्रथाओं के माध्यम से, प्राचीन भारतीयों ने एक पवित्र संसाधन के रूप में जल के प्रति अपना गहरा सम्मान व्यक्त किया, जीवन के भौतिक और आध्यात्मिक दोनों क्षेत्रों में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार किया[5]।

## 3. प्राचीन भारतीय ग्रंथों में जल का चित्रण

प्राचीन भारतीय ग्रंथों में जल का चित्रण गहन और बहुआयामी है, जो जीवन देने वाली और शुद्ध करने वाली शक्ति के रूप में इसकी आवश्यक भूमिका को दर्शाता है। वेदों, महाकाव्यों, पुराणों और बौद्ध और जैन ग्रंथों सहित प्राचीन भारतीय साहित्य के व्यापक स्पेक्ट्रम में जल को उसके विभिन्न रूपों में मनाया और सम्मानित किया जाता है। इनमें से प्रत्येक परंपरा जल के महत्व पर अद्वितीय दृ ष्टिकोण प्रस्तुत करती है, जो भौतिक पोषण और आध्यात्मिक शुद्धि दोनों के लिए इसकी केंद्रीयता को रेखांकित करती है।

वेदों में, विशेष रूप से ऋग्वेद और अथर्ववेद में, जल को सबसे शक्तिशाली प्राकृतिक तत्वों में से एक के रूप में मनाया जाता है, जो जीवन देने वाले और शोधक दोनों होने की दोहरी प्रकृति को दर्शाता

है। ऋग्वेद, जो कि सबसे पुराना वेद है, में जल को समर्पित कई भजन हैं, जिन्हें अक्सर अपाह के रूप में संदर्भित किया जाता है, जो कि जल की पवित्र और जीवन–निर्वाह प्रकृति को दर्शाता है। भजन जल को सभी जीवन का स्रोत बताते हैं, जो फसलों की वृद्धि, लोगों की भलाई और प्रकृति के संतुलन के लिए आवश्यक है। इन छंदों में, जल को एक दिव्य इकाई के रूप में दर्शाया गया है, जिसमें जीवन को पोषित करने और उर्वरता को बढ़ावा देने की शक्ति है। अथर्ववेद में इस श्रद्धा पर और अधिक जोर दिया गया है, जहाँ जल को इसके शुद्धिकरण गुणों के लिए बुलाया गया है। इसे एक ऐसे माध्यम के रूप में देखा जाता है जो शरीर और आत्मा को शुद्ध कर सकता है, अशुद्धियों और पापों को दूर कर सकता है और संतुलन बहाल कर सकता है। जल का यह दोहरा पहलू – एक भौतिक पोषण और एक आध्यात्मिक सफाई करने वाला – वैदिक अनुष्ठानों में इसके महत्व को उजागर करता है, जहाँ इसका उपयोग विभिन्न समारोहों में दिव्य आशीर्वाद प्राप्त करने और प्रतिभागियों की पवित्रता सुनिश्चित करने के लिए किया जाता है[6]।

महाकाव्यों और पुराणों में जल का महत्व जारी है, जहाँ यह कथाओं और धार्मिक प्रथाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। रामायण में, जल निकायों को अक्सर पवित्र स्थलों के रूप में दर्शाया जाता है जहाँ महत्वपूर्ण घटनाएँ घटित होती हैं। उदाहरण के लिए, सरयू नदी भगवान राम की कहानी का केंद्र है, जिसके तट पर अयोध्या शहर बसा है। नदी को राम के जीवन और परीक्षणों के साक्षी के रूप में चित्रित किया गया है, और माना जाता है कि इसके जल में पापों को धोने और आशीर्वाद देने की शक्ति है। इसी तरह, महाभारत में, गंगा और यमुना जैसी नदियाँ कहानी का अभिन्न अंग हैं। देवी गंगा के रूप में पहचानी जाने वाली गंगा, भीष्म के जन्म से लेकर पांडवों के पापों के अंतिम शुद्धिकरण तक महाकाव्य में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ये नदियाँ केवल भौगोलिक विशेषताएँ नहीं हैंय वे मानव नियति को प्रभावित करने की शक्ति वाली दिव्य संस्थाएँ हैं। पुराण, जो पौराणिक कहानियों और धार्मिक शिक्षाओं का एक विशाल संग्रह हैं, नदियों और जल निकायों की पवित्रता के बारे में और विस्तार से बताते हैं। इन ग्रंथों में गंगा, यमुना और सरस्वती जैसी नदी देवियों की मनुष्यों के साथ बातचीत की कहानियाँ आम हैं। इन देवियों को दयालु और शक्तिशाली देवताओं के रूप में दर्शाया गया है, जो वरदान देने और आत्माओं को शुद्ध करने में सक्षम हैं। मनुष्यों के साथ उनकी बातचीत अक्सर पानी के उपयोग के साथ आने वाली नैतिक और आध्यात्मिक जिम्मेदारियों पर जोर देती है, इस विचार को पुष्ट करती है कि पानी केवल एक संसाधन नहीं है बल्कि एक पवित्र इकाई है जिसका सम्मान और आदर किया जाना चाहिए[7]।

बौद्ध और जैन ग्रंथों में भी जल का महत्व स्पष्ट है, जहाँ यह धार्मिक अनुष्ठानों और शिक्षाओं में एक आवश्यक भूमिका निभाता है। बौद्ध धर्म में, विभिन्न अनुष्ठानों में जल का उपयोग किया जाता है, जैसे कि पुण्य समर्पण के दौरान जल डालना, जो दूसरों को पुण्य हस्तांतरित करने का प्रतीक है। पानी को शुद्धता और स्पष्टता के प्रतीक के रूप में भी देखा जाता है, जो मन की अशुद्धियों को साफ करने और ज्ञान प्राप्त करने के बौद्ध आदर्शों को दर्शाता है। बौद्ध अनुष्ठानों में पानी का उपयोग अक्सर हिंदू प्रथाओं को दर्शाता है, लेकिन शारीरिक के बजाय मानसिक और आध्यात्मिक शुद्धि पर ध्यान केंद्रित करता है। जैन धर्म, अहिंसा और पवित्रता पर अपने मजबूत जोर के साथ, पानी को भी बहुत सम्मान देता है। जैन अनुष्ठानों में, अभिषेक के दैनिक अभ्यास में पानी का उपयोग किया जाता है, जो आत्मा की शुद्धि का प्रतीक है, देवता की मूर्ति का एक औपचारिक स्नान है। जैन भी पानी के उपयोग के संबंध में सख्त प्रथाओं का पालन करते हैं, यह सुनिश्चित करते हैं कि यह प्रदूषित या

क्षतिग्रस्त न हो, जो अहिंसा और सभी जीवित प्राणियों के प्रति सम्मान के प्रति उनकी व्यापक प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

हिंदू, बौद्ध और जैन ग्रंथों में पानी के चित्रण की तुलना करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि तीनों परंपराओं में पानी का प्रतीकात्मक और अनुष्ठानिक उपयोग केंद्रीय है, लेकिन प्रत्येक की अपनी अनूठी व्याख्या और जोर है। हिंदू धर्म में, पानी मुख्य रूप से दिव्य स्त्री से जुड़ा हुआ है और व्यक्तिगत और सामुदायिक दोनों अनुष्ठानों का अभिन्न अंग है। बौद्ध धर्म में, आध्यात्मिक शुद्धि और गुणों के प्रतीकात्मक हस्तांतरण पर अधिक जोर दिया जाता है, जिसमें पानी मानसिक स्पष्टता और शुद्धता के रूपक के रूप में कार्य करता है। दूसरी ओर, जैन धर्म पानी के नैतिक उपयोग पर ध्यान केंद्रित करता है, जो अहिंसा और सभी जीवन रूपों के प्रति सम्मान के अपने व्यापक दर्शन के साथ संरेखित होता है। इन मतभेदों के बावजूद, इन परंपराओं में एक सामान्य बात यह है कि जल को एक पवित्र संसाधन के रूप में माना जाता है, जो जीवन को बनाए रखने और आध्यात्मिक कल्याण को बढ़ावा देने में इसकी मौलिक भूमिका को दर्शाता है[8]।

## 4. जल से जुड़े अनुष्ठान और अभ्यास

प्राचीन भारतीय धार्मिक परंपराओं के अनुष्ठानों और अभ्यासों में जल एक केंद्रीय भूमिका निभाता है, जो पवित्रता, जीवन और आध्यात्मिक नवीनीकरण का प्रतीक है। दैनिक स्नान से लेकर भव्य धार्मिक समारोहों तक, जल एक महत्वपूर्ण तत्व है जो भौतिक और आध्यात्मिक क्षेत्रों को जोड़ता है, जो इसके गहरे सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व को दर्शाता है।

प्राचीन भारतीय परंपराओं में, अनुष्ठान शुद्धि, या शुद्धि, धार्मिक जीवन का एक मूलभूत पहलू है, जिसमें जल शारीरिक और आध्यात्मिक स्वच्छता प्राप्त करने का प्राथमिक माध्यम है। दैनिक अनुष्ठान, जैसे स्नान और जल छिड़कना, केवल स्वच्छता संबंधी अभ्यास नहीं हैं, बल्कि गहन धार्मिक महत्व से ओतप्रोत हैं। पवित्र नदियों, झीलों या यहाँ तक कि घर पर भी स्नान करना शरीर और मन को शुद्ध करने, व्यक्तियों को प्रार्थना और अन्य धार्मिक गतिविधियों के लिए तैयार करने के लिए आवश्यक माना जाता है। वेद और अन्य प्राचीन ग्रंथ इन स्नानों के महत्व पर जोर देते हैं, पानी को एक शुद्ध करने वाले एजेंट के रूप में देखते हैं जो शारीरिक अशुद्धियों को दूर करता है और, सबसे महत्वपूर्ण बात, आत्मा को पाप और नकारात्मकता से मुक्त करता है[9]।

मंदिर के अनुष्ठानों में, पानी का एक प्रमुख स्थान है क्योंकि इसका उपयोग विभिन्न प्रसाद और समारोहों में किया जाता है। अभिषेक की रस्म, देवताओं की मूर्तियों को स्नान कराने की रस्म, में अक्सर पवित्र मंत्रों के जाप के साथ मूर्ति पर जल डालना शामिल है। यह क्रिया अशुद्धियों को धोने और देवता के पवित्रीकरण का प्रतीक है, जिससे भक्त दिव्य उपस्थिति में भाग ले सकते हैं। पानी का उपयोग पंचामृत अनुष्ठान में भी किया जाता है, जहाँ दूध, शहद, चीनी, घी और पानी का मिश्रण देवता को चढ़ाया जाता है, जो भौतिक पोषण और आध्यात्मिक पोषण दोनों में पानी की भूमिका को उजागर करता है। ये प्रथाएँ इस विश्वास को रेखांकित करती हैं कि पवित्र पदार्थ के रूप में पानी में शुद्ध करने और पवित्र करने की शक्ति है, जो इसे हिंदू पूजा में एक अनिवार्य तत्व बनाती है।

पानी की भूमिका दैनिक अनुष्ठानों से आगे बढ़कर प्रमुख धार्मिक समारोहों तक फैली हुई है, जहाँ यह कई हिंदू संस्कारों या संस्कारों का केंद्र है। जन्म समारोह, दीक्षा, विवाह और अंतिम संस्कार जैसे ये संस्कार, सभी अलग–अलग डिग्री में पानी को शामिल करते हैं। उदाहरण के लिए, नवजात शिशु के नामकरण समारोह के दौरान, दिव्य आशीर्वाद प्राप्त करने और जीवन की शुद्ध और शुभ शुरुआत सुनिश्चित करने के लिए बच्चे पर पानी छिड़का जाता है। विवाह समारोहों में, पानी का उपयोग

अक्सर कन्यादान के रूप में जाना जाता है, जहाँ पिता अपनी बेटी को विदा करते समय दूल्हे के हाथों में पानी डालता है, जो जिम्मेदारी के हस्तांतरण और मिलन की पवित्रता का प्रतीक है। नदियों से जुड़े अनुष्ठानों में भी पानी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जैसे कि गंगा आरती और दुर्गा पूजा और गणेश चतुर्थी जैसे त्योहारों के दौरान मूर्तियों का विसर्जन। गंगा नदी के तट पर प्रतिदिन की जाने वाली गंगा आरती एक शानदार अनुष्ठान है जहाँ भक्त नदी की पूजा करते हैं, इसकी दिव्य स्थिति को स्वीकार करते हैं और इसका आशीर्वाद मांगते हैं। नदी पर दीपक, फूल और धूपबत्ती प्रवाहित की जाती है, जो आत्मा की रोशनी और ईश्वरीय इच्छा के प्रति समर्पण का प्रतीक है। इसी तरह, त्योहारों के समापन पर नदियों में मूर्तियों का विसर्जन एक अनुष्ठान है जो हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान में सृजन और विघटन की चक्रीय प्रकृति को दर्शाते हुए, अपने प्राकृतिक निवास में दिव्य की वापसी का प्रतीक है[10]। ये समारोह जल, ईश्वर तथा जीवन, मृत्यु और पुनर्जन्म के चक्रों के बीच अंतर्निहित संबंध पर प्रकाश डालते हैं।

पवित्र नदियों और झीलों की तीर्थ यात्रा हिंदू धार्मिक जीवन का एक और महत्वपूर्ण पहलू है, जिसमें जल निकाय गंतव्य और आध्यात्मिक शुद्धि के माध्यम दोनों के रूप में कार्य करते हैं। गंगा नदी, पुष्कर झील या प्रयागराज (इलाहाबाद) में नदियों के संगम जैसे स्थलों की तीर्थयात्रा को महान पुण्य का कार्य माना जाता है, माना जाता है कि इससे आत्मा शुद्ध होती है और मुक्ति या मोक्ष की प्राप्ति होती है। दुनिया के सबसे बड़े धार्मिक समारोहों में से एक, कुंभ मेला गंगा, यमुना और पौराणिक सरस्वती नदियों के संगम के आसपास केंद्रित है, जहाँ लाखों भक्त अपने पिछले पापों से खुद को शुद्ध करने और आध्यात्मिक पुण्य प्राप्त करने के लिए जल में स्नान करते हैं। तीर्थ की अवधारणा – एक पवित्र पार या तीर्थ स्थल – आध्यात्मिक यात्राओं में जल के महत्व को रेखांकित करता है। हिंदू धर्म में, तीर्थ अक्सर नदियों, झीलों या समुद्र के किनारे स्थित होते हैं ये स्थल केवल भौतिक स्थान नहीं हैं, बल्कि आध्यात्मिक शक्ति से ओतप्रोत हैं, जहां भौतिक और आध्यात्मिक दुनिया के बीच की सीमाएं पतली मानी जाती हैं। इन जल निकायों की तीर्थयात्रा करने के कार्य को सांसारिक से पवित्रता की ओर जाने, पवित्र जल में खुद को शुद्ध करने और दिव्य के करीब जाने के रूप में देखा जाता है। ये तीर्थयात्राएं अक्सर अनुष्ठान स्नान या स्नाना में समाप्त होती हैं, जो बहुत भक्ति और नवीनीकरण की भावना के साथ किया जाता है। इस तरह के अनुष्ठानों का महत्व न केवल स्नान के भौतिक कार्य में है, बल्कि आध्यात्मिक परिवर्तन में भी है, जिसका यह प्रतीक है —आत्मा की शुद्धि, कर्म के बंधनों से मुक्ति और मुक्ति की ओर अंतिम यात्रा की तैयारी। पानी के साथ यह गहरा आध्यात्मिक संबंध हिंदू परंपरा में एक पवित्र संसाधन के रूप में इसकी पूजनीय स्थिति का प्रमाण है[11]।

## 5. जल की पवित्रता का सांस्कृतिक प्रभाव

प्राचीन भारतीय संस्कृति में जल की पवित्रता न केवल धार्मिक ग्रंथों और अनुष्ठानों में परिलक्षित होती है, बल्कि इसने जीवन के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक आयामों को भी गहराई से प्रभावित किया है। एक पवित्र संसाधन के रूप में जल के प्रति श्रद्धा दैनिक जीवन के विभिन्न पहलुओं में व्याप्त थी, जिसने कृषि पद्धतियों, सामुदायिक संगठन, जल संरक्षण प्रयासों और यहाँ तक कि कलात्मक और स्थापत्य अभिव्यक्तियों को भी आकार दिया।

प्राचीन भारत में जल की पवित्रता इसके व्यावहारिक उपयोगों से जुड़ी हुई थी, विशेष रूप से कृषि और सामुदायिक जीवन में। एक महत्वपूर्ण संसाधन के रूप में, जल जीवन को बनाए रखने और कृषि उत्पादकता सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक था, जो प्राचीन भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ थी।

नदियों, झीलों और अन्य जल निकायों को न केवल उनके आध्यात्मिक महत्व के लिए बल्कि फसलों और पशुधन को सहारा देने में उनकी भूमिका के लिए भी सम्मानित किया जाता था। गंगा और यमुना जैसी नदियों में हर साल आने वाली बाढ़ को एक दैवीय आशीर्वाद के रूप में देखा जाता था, जो मिट्टी को आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करती थी और भरपूर फसल सुनिश्चित करती थी। जल की पवित्रता और उसके आर्थिक कार्य के इस प्रतिच्छेदन ने समुदायों के बीच जल के प्रति गहरा सम्मान पैदा किया, जो इसे देवताओं की ओर से एक उपहार के रूप में देखते थे जो उनकी आजीविका को बनाए रखता था[12]।

कई प्राचीन भारतीय समुदायों में, जल निकाय सामाजिक जीवन के केंद्रीय केंद्रों के रूप में कार्य करते थे। कुएँ, तालाब और नदी के किनारे आम सभा स्थल थे जहाँ लोग मिलते थे, समाचारों का आदान–प्रदान करते थे और दैनिक अनुष्ठान करते थे। सामुदायिक जीवन में जल का महत्व जल पर केंद्रित कई त्योहारों और समारोहों में स्पष्ट है, जैसे नदी देवी की पूजा और मानसून के मौसम में बारिश का जश्न मनाना। इन प्रथाओं ने इस विचार को पुष्ट किया कि जल केवल एक प्राकृतिक संसाधन नहीं है बल्कि एक पवित्र तत्व है जो समुदायों को एक साथ बांधता है, इसके उपयोग और प्रबंधन में साझा जिम्मेदारी की भावना को बढ़ावा देता है।

जल की पवित्रता ने जल प्रबंधन और संरक्षण के लिए प्राचीन भारत के दृष्टिकोण को आकार देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पवित्र और व्यावहारिक संसाधन दोनों के रूप में जल के महत्व को पहचानते हुए, प्राचीन भारतीयों ने इसके संरक्षण और प्रबंधन के लिए परिष्कृत प्रणालियाँ विकसित कीं। इनमें जलाशयों, टैंकों और बावड़ियों का निर्माण शामिल था, जिन्हें न केवल पानी को संग्रहीत करने के लिए बल्कि पूरे वर्ष इसकी शुद्धता और पहुँच सुनिश्चित करने के लिए भी डिज़ाइन किया गया था। इनमें से कई संरचनाएँ मंदिरों और अन्य धार्मिक स्थलों के पास बनाई गई थीं, जो जल संरक्षण और धार्मिक अभ्यास के बीच संबंध को रेखांकित करती हैं[13]।

धार्मिक मान्यताओं ने प्राचीन भारत में जल संरक्षण प्रयासों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया। धर्म या धार्मिक जीवन की अवधारणा ने जल सहित प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा और संरक्षण के लिए व्यक्तियों और समुदायों की जिम्मेदारी पर जोर दिया। यह विश्वास विभिन्न धार्मिक आदेशों और रीति–रिवाजों में परिलक्षित होता था जो जल संरक्षण को बढ़ावा देते थे। उदाहरण के लिए, नदियों और झीलों पर पूजा (अनुष्ठान प्रसाद) की प्रथा में अक्सर जल निकायों की सफाई, मलबा हटाना और यह सुनिश्चित करना शामिल होता था कि धार्मिक और सामुदायिक उपयोग के लिए पानी शुद्ध रहे। इसके अलावा, सूखे के दौरान बारिश का आह्वान करने के लिए कुछ अनुष्ठान किए जाते थे, जो धार्मिक प्रथाओं और जल संसाधनों के प्रबंधन के बीच गहरे संबंध को दर्शाता है।

प्राचीन काल के शिलालेख भी जल संरक्षण पर दिए गए महत्व को दर्शाते हैं। कई शासकों और धनी संरक्षकों ने धार्मिक पुण्य के कार्यों के रूप में जल भंडारण और सिंचाई सुविधाओं का निर्माण किया, उनका मानना था कि इन प्रयासों से न केवल समुदाय को लाभ होगा बल्कि उन्हें आध्यात्मिक पुरस्कार भी मिलेंगे। बावड़ियों का निर्माण, जिन्हें बावड़ी या वाव के नाम से जाना जाता है, शुष्क क्षेत्रों में विशेष रूप से आम था, जो व्यावहारिक जल भंडारण और पूजा और चिंतन के लिए एक पवित्र स्थान दोनों प्रदान करते थे।

पानी की पवित्रता प्राचीन भारतीय कला और वास्तुकला में भी स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है, जहाँ नदियाँ, जल निकाय और जलीय रूपांकन अक्सर केंद्रीय विषय के रूप में दिखाई देते हैं। मूर्तियों, चित्रों और मंदिर की नक्काशी में नदियों को देवी के रूप में चित्रित करना प्राचीन भारतीय कला

की एक सामान्य विशेषता है। ये कलात्मक चित्रण अक्सर नदियों को सुंदर, परोपकारी आकृतियों के रूप में दिखाते हैं, जो कमल और उर्वरता और पवित्रता के अन्य प्रतीकों को पकड़े हुए हैं, जो जीवन देने वाले देवताओं के रूप में उनकी भूमिका पर जोर देते हैं। उदाहरण के लिए, नदी देवियों गंगा और यमुना को अक्सर मंदिरों के प्रवेश द्वार पर दर्शाया जाता है, जो पानी की शुद्ध करने वाली शक्ति और स्थान की आध्यात्मिक पवित्रता में इसके महत्व का प्रतीक हैं[14]।

मंदिरों और सार्वजनिक स्थानों के वास्तुशिल्प डिजाइन में भी पानी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पवित्र टैंक, जिन्हें पुष्करिनी या कुंड के रूप में जाना जाता है, मंदिर परिसरों के अभिन्न अंग थे, जो धार्मिक और व्यावहारिक दोनों उद्देश्यों की पूर्ति करते थे। इन टैंकों का उपयोग मंदिर में प्रवेश करने से पहले अनुष्ठान स्नान के लिए किया जाता था, जो पानी की शुद्ध करने वाली शक्ति में विश्वास को दर्शाता है। इन टैंकों की वास्तुकला में अक्सर विस्तृत नक्काशी और पानी तक जाने वाली सीढ़ियाँ होती थीं, जो चिंतन और पूजा के लिए एक शांत वातावरण बनाती थीं। गुजरात में प्रसिद्ध रानी की वाव जैसी बावड़ियाँ, उपयोगितावादी जल भंडारण को जटिल कलात्मक अभिव्यक्ति के साथ जोड़ती हैं, जो रूप और कार्य दोनों में पानी के प्रति गहरी श्रद्धा को दर्शाती हैं।

टैंकों और बावड़ियों के अलावा, कई मंदिरों को फव्वारे और चौनलों जैसी जल विशेषताओं के साथ डिजाइन किया गया था वास्तुकला के डिजाइन में पानी का समावेश घाटों के निर्माण तक बढ़ा है – नदी तक जाने वाली सीढ़ियों की श्रृंखला – जैसे कि वाराणसी में गंगा के किनारे। इन घाटों ने धार्मिक स्नान और समारोहों के लिए पवित्र नदी तक पहुँच प्रदान की, जो लोगों के दैनिक जीवन में पानी के सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व को और अधिक स्पष्ट करता है[15]।

## 6. निष्कर्ष

इस शोध ने प्राचीन भारतीय ग्रंथों और अनुष्ठानों में जल के गहन सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व को उजागर किया है। वेदों, पुराणों और महाकाव्यों में वर्णित जल केवल एक भौतिक संसाधन नहीं है, बल्कि दिव्य गुणों से भरपूर एक पवित्र इकाई है। गंगा, यमुना और सरस्वती जैसी नदियों को देवी के रूप में चित्रित किया गया है, जो जीवन देने वाली और शुद्ध करने वाली के रूप में उनकी भूमिका को दर्शाती हैं। दैनिक स्नान, प्रमुख समारोह और तीर्थयात्राओं सहित जल से जुड़े अनुष्ठान और धार्मिक प्रथाएँ आध्यात्मिक और सामुदायिक जीवन दोनों में इसके महत्व को रेखांकित करती हैं। जल को न केवल जीवन को बनाए रखने की क्षमता के लिए बल्कि भौतिक और आध्यात्मिक क्षेत्रों को जोड़ने में इसकी भूमिका के लिए भी मनाया जाता है, जो पवित्रता, नवीनीकरण और दिव्य ऊर्जा का प्रतीक है।

प्राचीन भारतीय समाज में जल की पवित्रता व्यापक सांस्कृतिक और सामाजिक मूल्यों को दर्शाती है, जो प्रकृति, आध्यात्मिकता और मानव जीवन के परस्पर संबंध पर जोर देती है। एक पवित्र संसाधन के रूप में जल के प्रति श्रद्धा ने कृषि और सामुदायिक संगठन से लेकर कला और वास्तुकला तक दैनिक जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित किया। इस पवित्रता ने जल संरक्षण और प्रबंधन के प्रति जिम्मेदारी की भावना को भी बढ़ावा दिया, धार्मिक मान्यताओं ने जल संसाधनों के संरक्षण और सतत उपयोग को बढ़ावा दिया। जल से जुड़ी सांस्कृतिक प्रथाएँ, जैसे कि अनुष्ठान स्नान, प्रसाद और पवित्र टैंकों और बावड़ियों का निर्माण, प्राचीन भारतीय समाज के सामाजिक ताने–बाने में आध्यात्मिक सिद्धांतों के गहन एकीकरण को प्रकट करते हैं।

भविष्य के शोध भारत में जल अनुष्ठानों और प्रथाओं पर उपनिवेशवाद के प्रभाव का पता लगा सकते हैं, यह जाँच करते हुए कि ब्रिटिश शासन ने पानी और उसके प्रबंधन के लिए पारंपरिक श्रद्धा को

कैसे प्रभावित किया। इसके अतिरिक्त, प्राचीन जल प्रथाओं की आधुनिक प्रासंगिकता की जाँच करने की क्षमता है, विशेष रूप से समकालीन पर्यावरणीय चुनौतियों और जल संरक्षण प्रयासों के संदर्भ में। यह समझना कि जल संरक्षण और पवित्रता के प्राचीन भारतीय सिद्धांतों को आज कैसे लागू किया जा सकता है, स्थायी जल प्रबंधन प्रथाओं में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकता है।

## संदर्भग्रंथ सूची:


[1] शर्मा, आर.एस., "Material Culture and Social Formations in Ancient India", मैकमिलन इंडिया, 1983, पृष्ठ 56–59

[2] डांडेकर, आर.एन., "Vedic Mythological Tracts", अजंता पब्लिकेशंस, 1986, पृष्ठ 112–115

[3] सारस्वती, स्वामी सत्यनंद, "Ganga: A Divine Life", योग पब्लिकेशन ट्रस्ट, 1984, पृष्ठ 65–68

[4] सुब्रमण्यम, वी., "Sacred Groves and Sacred Trees: Rituals in Indian Traditions", मुनशिराम मनोहरलाल पब्लिशर्स, 2000, पृष्ठ 45–49

[5] गुप्ता, संजुक्ता, "Laksmi Tantra: A Pancharatra Text", मोतीलाल बनारसीदास, 1972, पृष्ठ 150–153

[6] माइकल्स, एक्सल, "Hinduism: Past and Present", प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 2004, पृष्ठ 89–93

[7] कुमारस्वामी, आनंद के., "Hinduism and Buddhism", जॉर्ज जी. हार्रप एंड को., 1943, पृष्ठ 110–113

[8] नाइप, डेविड एम., "Vedic Voices: Intimate Narratives of a Living Andhra Tradition", ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2015, पृष्ठ 102–106

[9] ओलिवेल, पैट्रिक, The Asrama System: "The History and Hermeneutics of a Religious Institution", ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1993, पृष्ठ 85–87

[10] ओश्फ्लेहर्टी, वेंडी डोनिगर, "The Rig Veda: An Anthology", पेंगुइन क्लासिक्स, 1981, पृष्ठ 78–81

[11] सिंह, राणा पी.बी., "Ganga: The River] Its Cultural Meanings and Landscape Transformation", आर्यन बुक्स इंटरनेशनल, 1994, पृष्ठ 92–96

[12] बैशम, ए.एल., "The Wonder That Was India", ग्रोव प्रेस, 1954, पृष्ठ 237–240

[13] अल्तेकर, ए.एस., "Education in Ancient India", नंद किशोर एंड ब्रदर्स, 1965, पृष्ठ 122–125

[14] फ्लड, गेविन डी., "An Introduction to Hinduism", कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1996, पृष्ठ 43–45

[15] डुबे, एस.सी., "Indian Village", रूटलेज, 1955, पृष्ठ 22–25